श्री शंकर शिक्षायतन

वैदिक शोध केन्द्र

आवरणवादविमर्श

(पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत सृष्टिविषयक वादग्रन्थविमर्श शृंखला-४)

<u>प्रतिवेदन</u>

श्री शंकर शिक्षायतन द्वारा पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत सृष्टिविषयक वादग्रन्थविमर्श शृंखला के अन्तर्गत दिनांक ३० अप्रैल २०२१ को **आवरणवादविमर्श** विषयक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का समायोजन किया गया।

आवरणवाद ग्रन्थ में सृष्टि की उत्पत्ति के सिद्धान्त को उद्घाटित किया गया है। पण्डित मधुसूदन ओझाजी ने ऋग्वेद के नासदीयसूक्त एवं उसके आधार पर ब्राह्मणों, आरण्यकों एवं अन्य परवर्ती वैदिक ग्रन्थों में प्रतिपादित सृष्टिविषयक सन्दर्भों का आलोडन करते हुए उनको आधार बना कर सृष्टिविषयक पूर्वपक्ष के रूप में व्याख्यायित आवरणवाद, व्योमवाद, अम्भोवाद एवं अपरवाद आदि १० वादों के स्पष्टतया अवबोधन हेतु एक-एक वाद पर कुल १० वाद ग्रन्थों का प्रणयन किया है जिसका सृष्टिसिद्धान्त से साक्षात् सम्बन्ध है।

आवरणवाद ग्रन्थ में कुल १४५ कारिकाएँ हैं एवं ओझाजी प्रणीत एक अन्य ग्रन्थ दशवादरहस्य में आवरणवाद से सम्बन्धित १८ कारिकाएँ हैं तथा ओझा जी के ही एक और ग्रन्थ ब्रह्मविनय में आवरणवाद विषयक ८ कारिकाएँ हैं जिनमें ओझाजी ने सृष्टिविषयक आवरणवाद को व्याख्यायित किया है। इस प्रकार आवरणवाद से सम्बन्धित ओझाजी के उपर्युक्त ग्रन्थों में प्रतिपादित विषय को समझने के उद्देश्य से यह आवरणवादविमर्श संगोष्ठी समायोजित की गयी थी।

आवरणवादग्रन्थ का विषयविन्यास इस प्रकार है। उपोद्घात में वय, वयुन और वयोनाध का सामान्य परिचय, प्राण का वय और वयोनाध के रूप में वर्णन, छन्द का वयोनाध से सम्बन्ध एवं प्राण और छन्द की एकरूपता का प्रतिपादन। इस प्रकार इस उपोद्घात में चार विषय बनते हैं। प्राण की व्याख्या नामक दूसरे विभाग में ७ विषयों को स्पष्ट किया गया है। इसमें प्राण के आलोक में वय, वयुन और वयोनाध इन तीनों तत्त्वों के रूप में सृष्टि की समग्रता का वर्णन है। जगत् का आवरक तत्त्व प्राण, प्राण की प्रस्तुति, उक्थ के रूप में प्राण, संपूर्ण सृष्टि प्राण में

समाहित रहता है, प्राण की सर्वात्मकता, लोकपाल एवं ईश्वरत्व का विवेचन एवं सौरब्रह्माण्ड का मूल प्राण ही सूर्य है, आदि विषयों का प्रतिपादन किया गया है। तृतीयविभाग में छन्द के विविध आयामों का वर्णन है एवं छन्द से सृष्टि के प्रादुर्भाव पर विचार किया गया है।

जूम मीटिंग के माध्यम से समायोजित इस ऑनलाइन कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् विषय को स्पष्ट करते हुए मुख्य वक्ता प्रो. राजधर मिश्र, आचार्य, व्याकरण विभाग, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ने कहा कि जो विषय को स्पष्ट करता है वह वाद है। संस्कृत में इसकी व्युत्पत्ति है- 'वदति इति वादः।' इस प्रकार सृष्टि विषयक आवरण सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाला ग्रन्थ ही आवरणवाद है । पण्डित मधुसूदन ओझा ने इस आवरणवाद को छन्दोवाद, वयुनवाद, प्राणवाद और वयोवाद आदि अन्य नामों से भी अभिहित किया है जिसका उल्लेख उनके दशवादरहस्य नामक ग्रन्थ में मिलता है-

"आवरणवाद एव च्छन्दोवादश्च वयुनवादश्च ।
स प्राणवाद एव वयोवादश्च शक्यते वक्तुम् ॥"

आवरण शब्द का अर्थ ढकना अथवा आच्छादन होता है। जिस प्रकार ज्ञान अज्ञान से, अग्नि धूम से, सूर्य बादल से ढका रहता है उसी प्रकार यह समग्र विश्व भी आवरण तत्त्व से आच्छादित है। इस आवरण शब्द के लिए अनेक शब्द संस्कृत में प्रयुक्त होते हैं। जैसे- आवृत, आच्छन्न, वेष्टित आदि। पं. ओझाजी ने इस आवरणवाद ग्रन्थ में इस के पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख किया है। आच्छादन, आवृति, संवृति, अवच्छिति, मिति, चन्दन, तन्त्रण, निर्बन्धन और हरिदान ये सभी शब्द समानार्थक हैं-

"आच्छादनं चावृति-संवृती अव-
च्छीतिर्मितिश्चन्दन-तन्त्रणे तथा ।
निर्बन्धनं वा हरिदानमित्यपि
प्रायः समानार्थतया निरूपिताः॥"

वयुन, वय और वयोनाध इन तीनों शब्दों को एक साथ इस ग्रन्थ में समझाया गया है। वयुन एक व्यापक सत्ता है। इस व्यापक सत्ता में वय और वयोनाध रहते हैं। यह संपूर्ण जगत् ही वयुन है। संसार में जितने भी पदार्थ हैं वे सभी वयुन हैं । समष्टि (समूह रूप में) अथवा व्यष्टि(भिन्न-भिन्न रूप में) यह वयुन ही है । वयः और वयोनाध ये दोनों वस्तु के धर्म हैं। वस्तु के भाव हैं। संसार की सभी वस्तुएँ इन पर आधारित हैं। अतः ये वस्तु धर्म हैं। ये दोनों वयः वयोनाध ही दो वस्तुओं में विक्षणता उत्पन्न करते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. ललित कुमार गौड, आचार्य, संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने कहा कि आवरणवाद में छन्द के स्वरूप पर व्यापक विमर्श किया गया है। छन्द को ही वयोनाध कहते हैं। छन्द से ही संपूर्ण जगत् की उत्पत्ति होती है। संसार में जिस अन्न को हम खाते हैं वह अन्न भी छन्द से अच्छादित है। गायत्रीछन्द ब्रह्मवर्चस् का द्योतक है। उष्णिक् छन्द आयु का द्योतक है। अनुष्टुप् छन्द स्वर्ग का द्योतक है और बृहतीछन्द श्री तथा यश का

द्योतक है। पङ्क्ति छन्द यज्ञ का द्योतक है, त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रिय और सामर्थ्य का द्योतक है, जगती छन्द पशु का द्योतक है और विराट् छन्द अन्न का द्योतक है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. पवन कुमार पाण्डेय, सहायक आचार्य, संस्कृत एवं वैदिक विभाग, कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत-पुरातन अध्ययन विश्वविद्यालय, असम ने आवरणवाद में प्रतिपादित प्राण के स्वरूप एवं इसके विविध आयाम पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्राण वयोनाध है। वयुन प्राणस्वरूप वयोनाध और वय से भिन्न नहीं है। प्राण ही वयोनाध और वयुन का रूप धारण कर लेता है। इसी क्रम में पं. ओझा जी कहते हैं कि प्रथम प्रजापति के पुत्र पतङ्ग नामक ऋषि ने प्राणस्वरूप वयोनाध विषय को स्पष्ट किया। उन्हीं से महर्षि दीर्घतमा ने प्राण का विस्तृत विवेचन समझा था । ऋग्वेद के एक मन्त्र में गोपा शब्द प्रयुक्त हुआ है। जिसका अर्थ सूर्य है। महर्षि तित्तिरि ने गोपा शब्द का अर्थ सूर्य किया है। जो सभी भुवनों में बाह्य प्राण के रूप में स्थित रहता है। महर्षि ऐतरेय के विचार में गोपा शब्द का अर्थ आन्तरिक प्राण है। सारांश यह है कि प्राण का सूर्य के साथ सम्बन्ध स्थापित किया गया है एवं उसका प्राण के आन्तरिक एवं बाह्यरूप में ग्रहण है। प्राण अक्षर तत्त्व है, प्राण ही ये वेद हैं, प्राणों के बिना जीवमात्र की सत्ता नहीं हो सकती है। प्राण ही भूत, ऋषि और देव है। प्राण ही प्रजामात्र का सूर्य है-

"प्राणोऽक्षरं, प्राण इमे च वेदाः
प्राणादृते नाम न हि किञ्चिदस्ति ।
भूतानि देवा ऋषयः स एव
प्राणः प्रजानामयमस्ति सूर्यः॥"

इस एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का संचालन डॉ. मणि शंकर द्विवेदी, वरिष्ठ शोध अध्येता, श्री शंकर शिक्षायतन ने तथा धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल, श्री शंकर शिक्षायतन ने किया । कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ से हुआ। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के आचार्यों एवं शोधार्थियों ने सक्रिय सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाया।